7/11/20 - विषय - हिन्दी नाम - डॉ॰ साधना कुमारी Time — 1.30 to 11:20

Lecture-1

बोली की विशेषता एवं बोली के भाषा बनने के कारण

भाषा जब किसी सीमित क्षेत्र में केवल घरेलू रूप में प्रचलित रहती है, तब वह 'बोली' कहलाती है। उसमें कोई विशिष्ट साहित्य नहीं रहता। वह केवल बोलने वालों की साधारण बातचीत ही सीमित रहती है। भाषा वैज्ञानिक डॉ॰ भोला नाथ तिवारी के अनुसार बोली की परिभाषा इस प्रकार है —

"बोली किसी भाषा के एक ऐसे सीमित क्षेत्रीय रूप को कहते हैं जो ध्वनि रूप, वाक्यगठन, अर्थ, शब्द-संग्रह तथा मुहावरों आदि की दृष्टि से उस भाषा के प्रतिष्ठित तथा अन्य क्षेत्रीय रूपों से भिन्न होता है, किन्तु इतना भिन्न नहीं कि अन्य रूपों के बोलनेवाले उसे समझ न सकें, साथ ही जिसके अपने क्षेत्र में कहीं भी बोलनेवालों के उच्चारण, रूप-रचना, वाक्य-गठन, अर्थ, शब्द-समूह तथा मुहावरों आदि में कोई बहुत और महत्वपूर्ण भिन्नता नहीं होती।" भाषा विज्ञान 261

डॉ॰ भोला नाथ तिवारी ने प्रतिष्ठित भाषा और बोली में अन्तर किया है। इनके अनुसार वाक्य-गठन तथा मुहावरे आदि की दृष्टि से बोली भाषा के भिन्न है। वस्तुतः दोनों में भेद संरचना का नहीं है, क्षेत्रीय विस्तार की दृष्टि से दोनों भिन्न है।

बोली की विशेषता — एक भाषा के अन्तर्गत जब भिन्न-भिन्न रूप विकसित हो जाते हैं तब उन्हें 'बोली' कहते हैं। सामान्यतः कोई बोली तभी तक बोली कही जाती है। जब तक राजनीति, धर्म, व्यापार, या अन्य कारणों से उसे प्रतिष्ठा नहीं प्राप्त हो जाती अथवा उसमें ऐसी विशेषता विकसित नहीं हो जाती कि पड़ोसी बोलियों में बोलनेवाले उसे समझ न सकें। इन दोनों कारण के होते ही बोली भाषा बन जाती है

हिन्दी अंग्रेजी, रूसी सभी भाषाएँ प्रारम्भ में बोली थी जो कालान्तर में भाषा बन गयी।

भाषा भी कभी-कभी बोली बन जाती है। यदि किसी एक भाषा की एक शाखा का अन्य शाखाओं से संपर्क-विच्छेद हो जाता है तो वह शाखा बोली बन जाती है।

यदि एक भाषा के लोग भौगोलिक या राजनीतिक कारणों से अलग-अलग जा पड़ते हैं और उनमें परस्पर विचार-विनिमय नहीं हो पाता तो उनकी भाषा में कुछ ऐसी विशेषताएँ विकसित हो जाती हैं जो उन्हें बोली बनने को बाध्य करती हैं।

कभी-कभी राजनीतिक कारणों से कुछ लोग अपनी भाषा के क्षेत्र से दूर जा पड़ते हैं और वहाँ उनकी नयी बोली विकसित हो जाती है। जैसे- मूल जर्मन भाषा के लोग जब इंग्लैंड में बस गये तब अंग्रेजी एक अलग बोली बन गयी।

हिंदी भाषा देश के बहुत विस्तृत भू-भाग में बोली जाती है। साथ ही आज अपनी सरलता, सहजता और विनम्रता के कारण हिंदी ने अल्पकाल में लोकप्रियता प्राप्त की है जिसके कारण आज हिन्दी का एक अंतर्राष्ट्रीय भाषा के रूप में अपना स्थान बना चुकी है। मोटे तौर पर हरियाणा, दिल्ली, उत्तरप्रदेश, झारखण्ड, उत्तरांचल, बिहार, छत्तीसगढ़, मध्यप्रदेश और राजस्थान इन राज्यों की गणना हिंदी प्रदेशों में की जाती है।